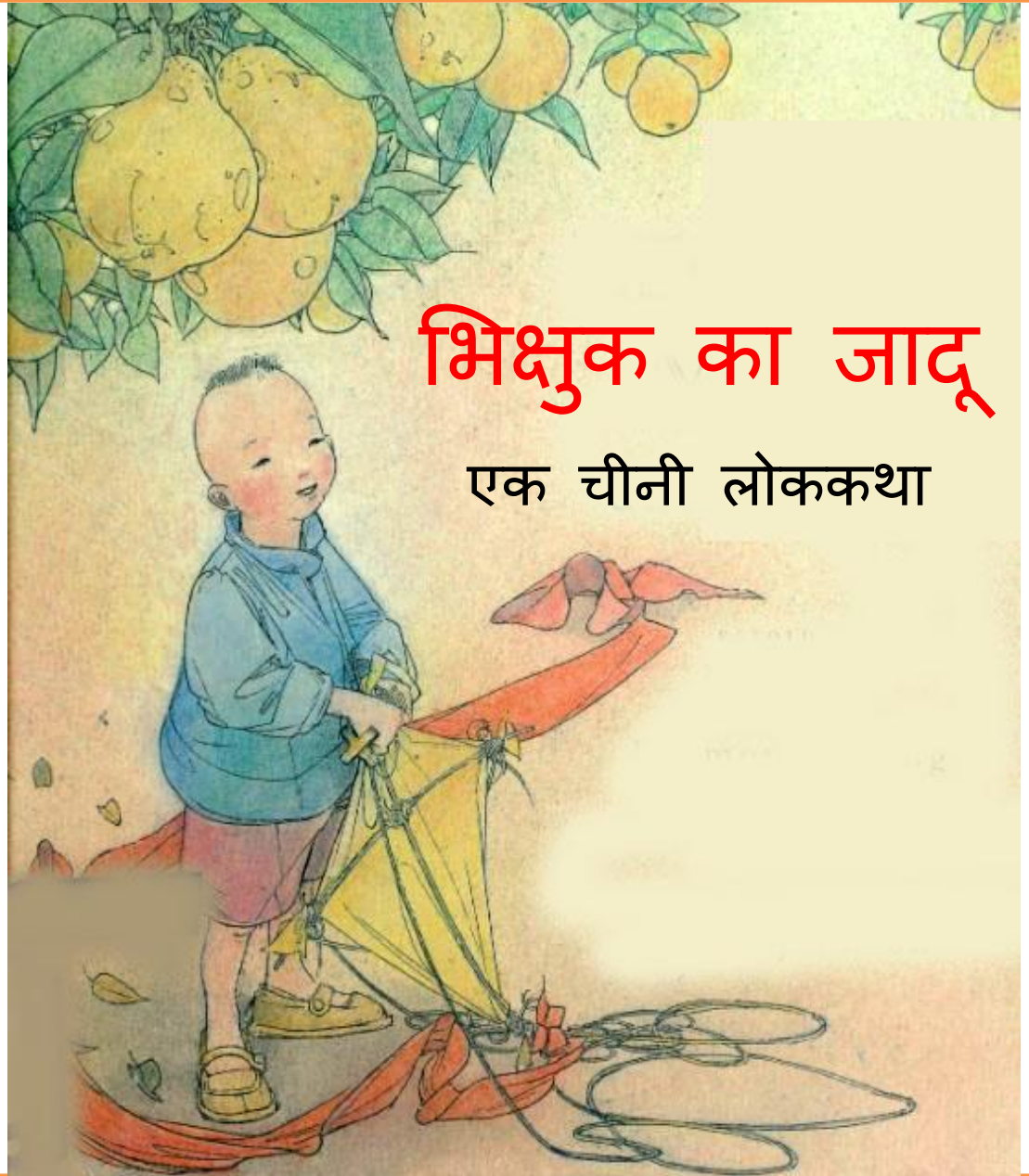
भिक्षुक का जादू
एक चीनी लोककथा

भिक्षुक का जादू

एक चीनी लोककथा

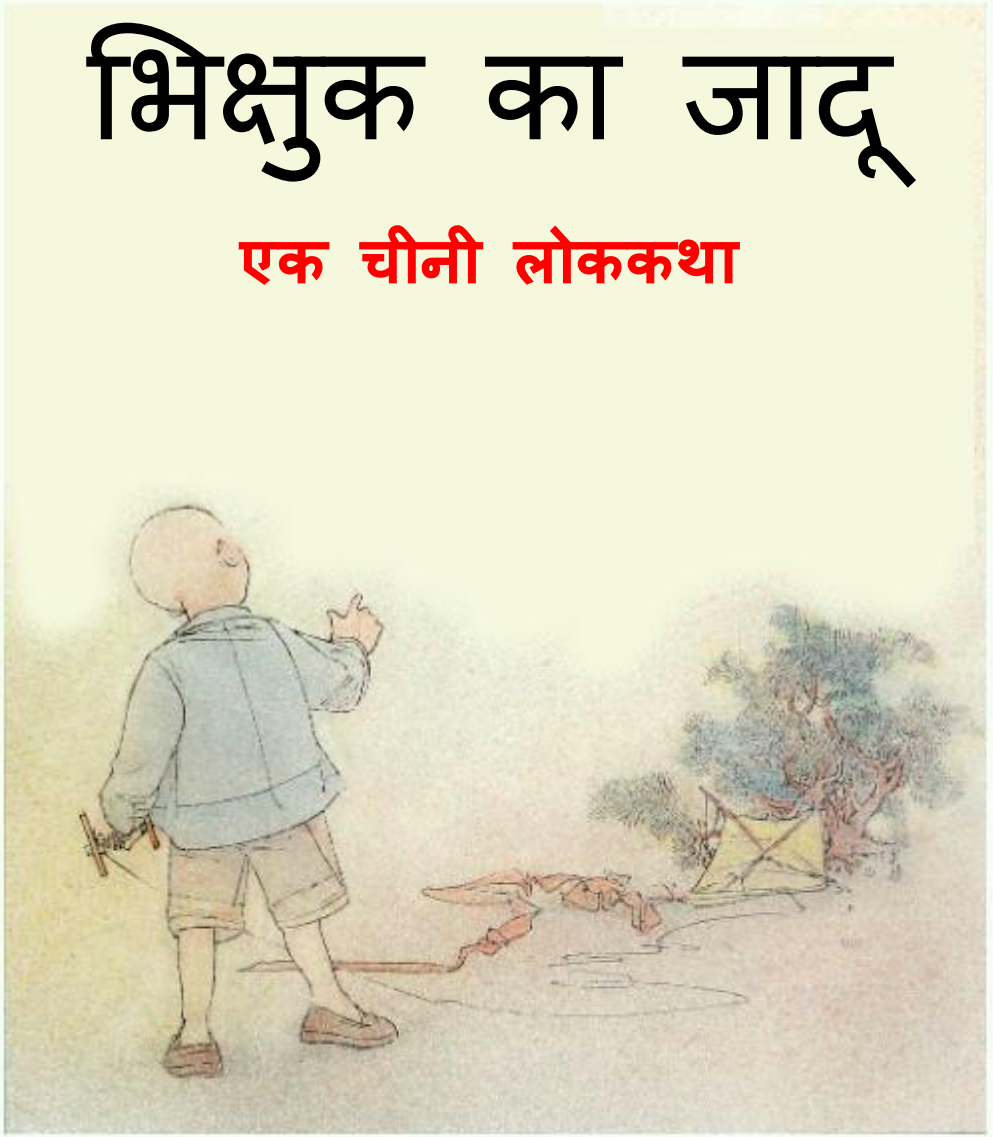

भिक्षुक का जादू

एक चीनी लोककथा

बहुत समय पहले चीन में एक दिन एक अजनबी एक गाँव में आये. फू नान, जो अपने माता-पिता के साथ गाँव के बाहर एक फार्म में रहता था, सब से पहले उस अजनबी से मिला. उसे लगा कि वह शायद एक घुम्मकड़ सन्यासी थे, वैसे ही जिनके विषय में उसने कहानियों में सुन रखा था. एक सन्यासी जो जादू कर सकते थे. उनके अचानक प्रकट होने से फू नान डर गया, लेकिन अजनबी का हाव-भाव बहुत ही शांत और उदार था. फू नान ने विनम्रतापूर्वक उनका अभिवादन किया.

“कुछ समय रहने के लिए यह जगह अच्छी प्रतीत होती है,” वृद्ध ने कहा. “क्या तुम बता सकते हो कि मैं कहाँ सो सकता हूँ?”

फू नान ने उन्हें एक वीरान कुटिया दिखाई जो गाँव की सीमा पर स्थित थी. वहाँ वृद्ध ने अपने लिए घास-फूस का बिस्तर बना लिया और दीवार पर एक कागज़ लटका दिया जिस पर बड़ी और बेढंगी लिखाई में कुछ शब्द चित्रित किए हुए थे. वृद्ध उस झोंपड़ी को अपना विहार कहने लगे. हर सुबह फू नान और उसके मित्र कुटिया की खिड़की से भीतर झाँकते और वृद्ध के नींद से जागने की प्रतीक्षा करते.

जब वृद्ध गाँव में भिक्षा मांगने जाते तो बच्चों को उनके साथ रहना अच्छा लगता था. वह सदा प्रसन्न रहते थे और मौसम की ओर उनका ध्यान कभी न जाता था. वर्षा हो या धूप, वृद्ध वही पुराने सैंडल और जीर्ण-शीर्ण लबादा पहने रहते थे. चूँकि सब जानते थे कि घुम्मकड़ सन्यासियों ने निर्धन रहने का संकल्प लिया होता था, इसलिए गाँव वाले प्रसन्नता से उन्हें चावल और सब्ज़ियाँ दे देते थे.

फू नान ने उन्हें आगाह कर दिया था कि वह उस ज़िले के सबसे धनी व्यक्ति, कंजूस किसान वू के पास कभी नहीं जायें. “जो भिक्षुक अंतिम बार उसके घर गया था, किसान वू ने उस पर अपने कुत्ते छोड़ दिये थे,” फू नान ने बताया.

क्योंकि बच्चे अकसर उनके साथ रहते थे इसलिए उन्हें ही सबसे पहला पता लगा कि वृद्ध सन्यासी के पास कुछ अनोखी शक्तियाँ थीं.

एक सुबह जब उन्होंने बच्चों का अभिवादन किया तो वृद्ध ने देखा कि टोकरी बनाने वाले के बेटे ने एक पिंजरा पकड़ रखा था जिसके अंदर एक चिड़िया बंद थी. बेचारा पक्षी फड़फड़ा रहा था और पिंजरे की छड़ों से बार-बार टकरा रहा था.

“अगर तुम पक्षी को छोड़ दो तो मैं तुम्हें एक जादू दिखाऊँगा,” वृद्ध ने उससे कहा.

आश्चर्यचकित लड़के ने सिर हिला कर हामी भरी. वृद्ध कुटिया के अंदर गये और एक काला कपड़ा, स्याही, एक कलम, कागज़ और एक ब्रश लेकर बाहर आये. उन्होंने काला कपड़ा पिंजरे के ऊपर लपेट दिया. जब वह स्याही में पानी मिला रहे थे तब बच्चे उन्हें चुपचाप देख रहे थे. उन्होंने झटपट ब्रश चलाया और पिंजरे में कैद पक्षी का चित्र बना दिया. चित्र इतना सजीव था कि बच्चों को लगा कि पक्षी अभी गाने लगेगा. चित्र में उन्होंने पिंजरे का दरवाज़ा खुला चित्रित किया था.

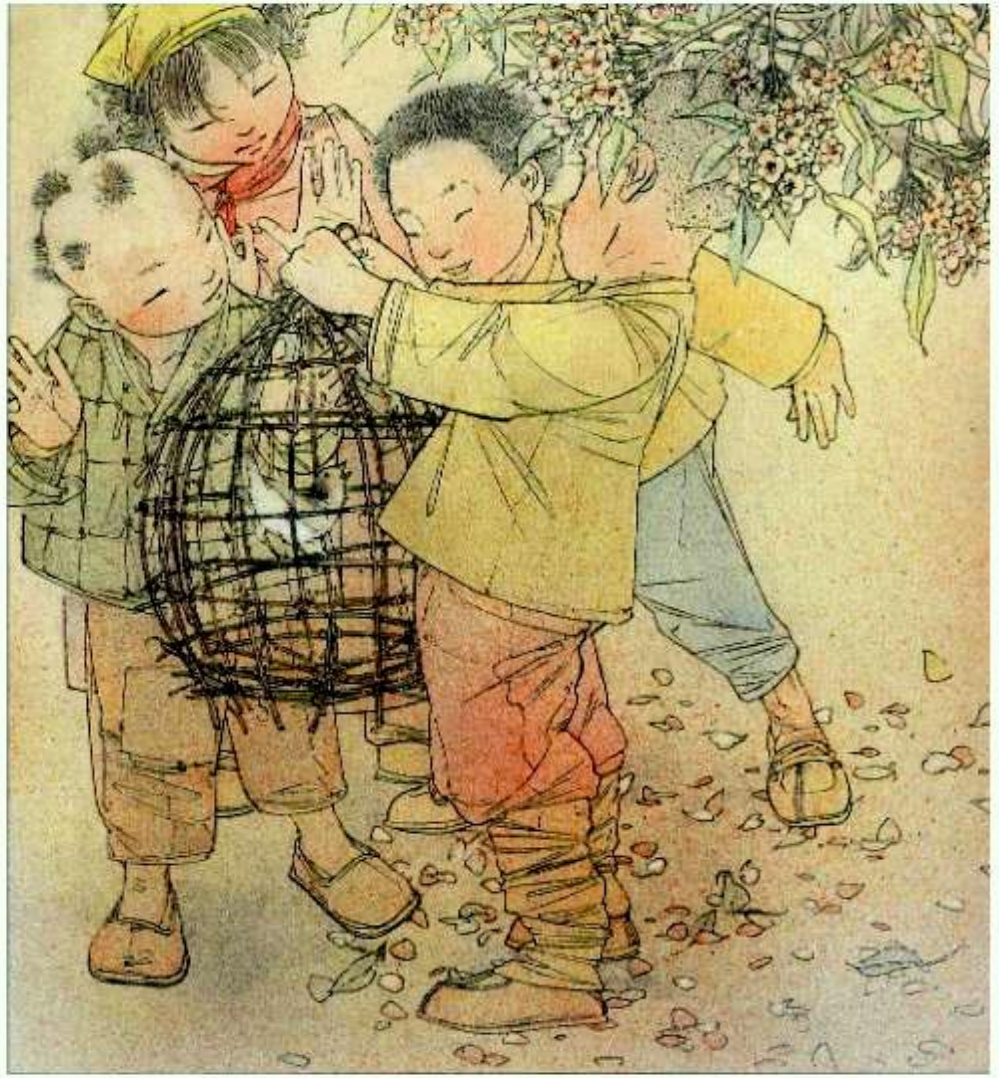

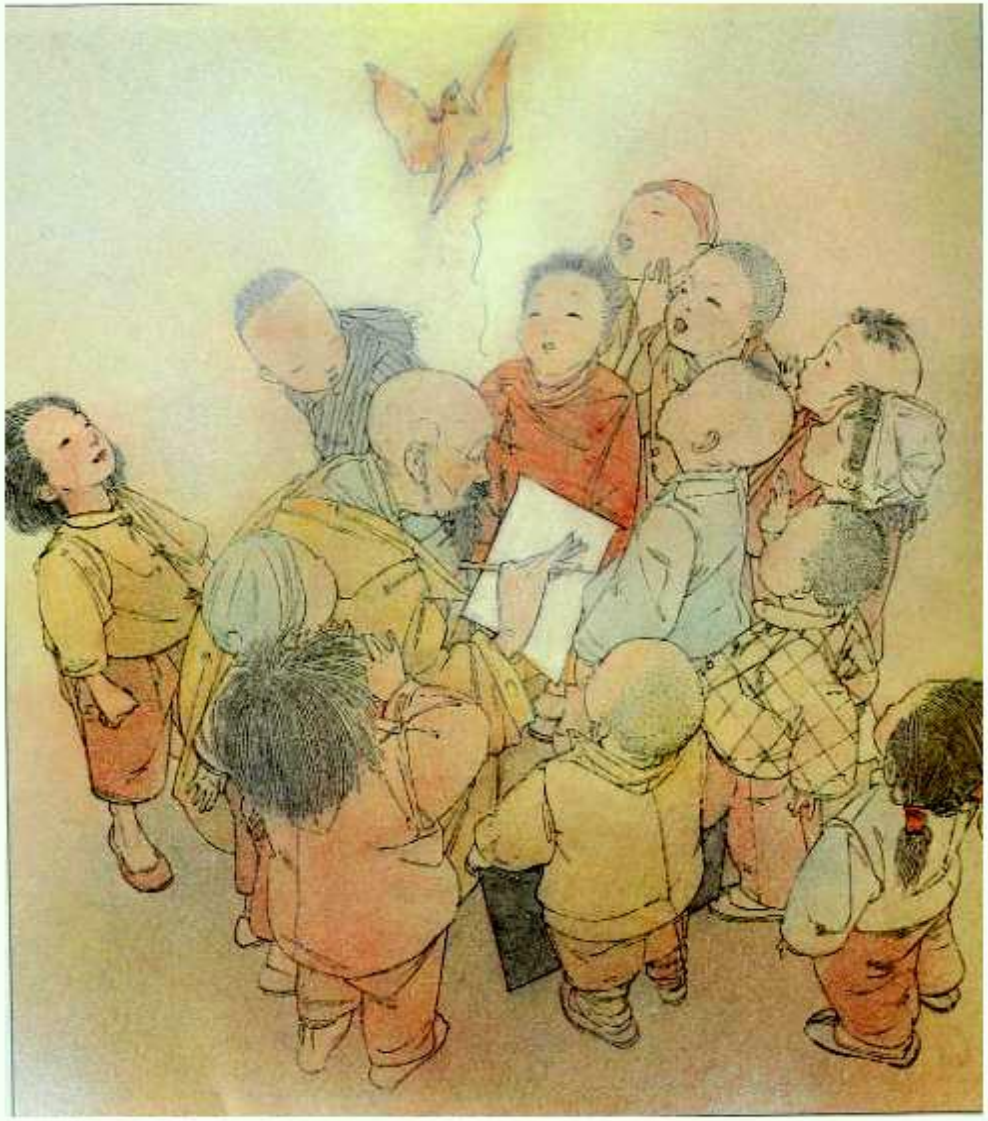

तभी चित्र में बना पक्षी चहचहाने लगा. पिंजरे के खुले दरवाज़े से वह बाहर निकल आया और कागज़ से उड़ कर पास के एक पेड़ की डाल पर जा बैठा. टोकरी बनाने वाले के बेटे ने झपट कर पिंजरे पर लिपटा कपड़ा खींच लिया. विस्मय से फू नान और बाकी बच्चे चिल्ला दिए. पिंजरा खाली था.

सन्यासी लड़के को देख कर मुस्कराये. “तुम ने एक अच्छा काम किया है,” उन्होंने उससे कहा. “तुम ने एक जंगली जीव को स्वतंत्र कर, उसकी प्रकृति अनुसार उसे जीने का अवसर दिया है.”

“क्या वह जादू आप मुझे सीखा सकते हैं?” फू नान ने बाद में वृद्ध से पूछा.

वृद्ध ने प्यार से कहा, “यह जादू सीखने से पहले मुझे सन्यासी बनने के लिए अपना सब कुछ त्यागना पड़ा था. फिर मैंने वर्षों तक अध्ययन किया था और संकल्प लिया था कि इस जादू का मैं कभी भी अपने लाभ के लिए उपयोग नहीं करुँगा. तुम अभी बहुत छोटे हो. अपना लक्ष्य जानने के लिए थोड़ी प्रतीक्षा करो.”

गाँव में फू नान कभी-कभी एक गरीब विधवा लियांग की सहायता करता था और पानी से भरी बाल्टी गाँव के कुएं से उठा कर उसके घर ले जाता था, क्योंकि उसके कुएं में पानी खत्म हो गया था.

गर्मी के एक दिन फू नान ने वृद्ध को लियांग से बात करते सुना, “तुम्हारा कुआँ कब से सूखा हुआ है?”

“एक वर्ष से, जब किसान वू ने पानी की धारा को जो मेरे कुएं में जाती थी अपने नाशपाती के बाग़ की ओर मोड़ लिया था.” लियांग ने उत्तर दिया.

“शायद मैं तुम्हारी सहायता कर पाऊँ,” सन्यासी ने कहा. उन्होंने एक कलछी पानी लियांग के कुएं में डाल दिया. अगली सुबह उसने देखा कि कुआँ ऊपर तक मीठे, निर्मल पानी से भरा हुआ था.

फू नान और लियांग ने ही यह चमत्कार देखा था लेकिन कुछ दिनों बाद भिक्षुक-सन्यासी के इस जादू का सारे गाँव को पता चल गया.

अगस्त चंद्रमा उत्सव के दिन गाँव के चौराहे की ओर जाने वाला रास्ता उन किसानों और व्यापारियों से भरा हुआ था जो बाज़ार में बेचने के लिए अपना सामान ला रहे थे. फू नान के माता-पिता गोभी की टोकरियाँ उठाये हुए बाज़ार की ओर आ रहे थे. जब फू नान ने भिक्षुक-सन्यासी को देखा तो उसने माता-पिता से पूछा कि क्या वह वृद्ध सन्यासी के साथ-साथ चल सकता था.

फू नान वृद्ध को उस नई पतंग के बारे में बताने लगा जो वह जन्मदिन पर मिले पैसों से खरीदना चाहता था. अचानक उनके पीछे रास्ते पर कुछ हंगामा होने लगा. किसान वू का गधा, जो नाशपातियों से भरा ठेला खींच रहा था, भीड़भाड़ वाले रास्ते पर सबको तितर करता हुआ दौड़ने लगा था. भारी बोझ से दबे गधे को और तेज़ दौड़ाने के लिए किसान वू उसे पीट रहा था और उस पर चिल्ला रहा था.

जब तक फू नान और वृद्ध सन्यासी गाँव के बाज़ार में पहुँचे, किसान वू अपने ठेले पर लदी नाशपातियाँ बेच रहा था. सूर्य की गर्मी के कारण सबको प्यास लग रही थी और मीठी, रसभरी नाशपातियाँ खूब बिक रही थीं, यद्यपि किसान भारी दाम माँग रहा था.

“क्या आप अपनी एक स्वादिष्ट नाशपाती मुझे खाने के लिए दे सकते हैं?” सन्यासी ने किसान वू से पूछा.

“दूर हटो, ओ फटीचर भिखारी! तुम्हें कुछ न मिलेगा,” किसान वू चिल्लाया.

“लेकिन तुम्हारे पास तो बहुत सारी नाशपातियाँ हैं,” वृद्ध ने अनुनय की. “निश्चय ही तुम एक नाशपाती दे सकते हो.”

उनकी बहस सुनने के लिए कई लोग इकट्ठे हो गए. किसी ने कहा, “इतने कंजूस मत बनो! वृद्ध को एक नाशपाती दे दो!” लेकिन किसान ने गुस्से से अपनी लाठी घुमाई और सन्यासी को बुरा-भला कहा.

जो नई पतंग खरीदने का सपना वह देख रहा था उसको भूला कर, फू नान ने अपनी जेब में हाथ डाला. पतंग मैं बाद में भी ले सकता हूँ, उसने अपने आप से कहा और झटपट अपने सिक्के किसान वू को दे दिए.

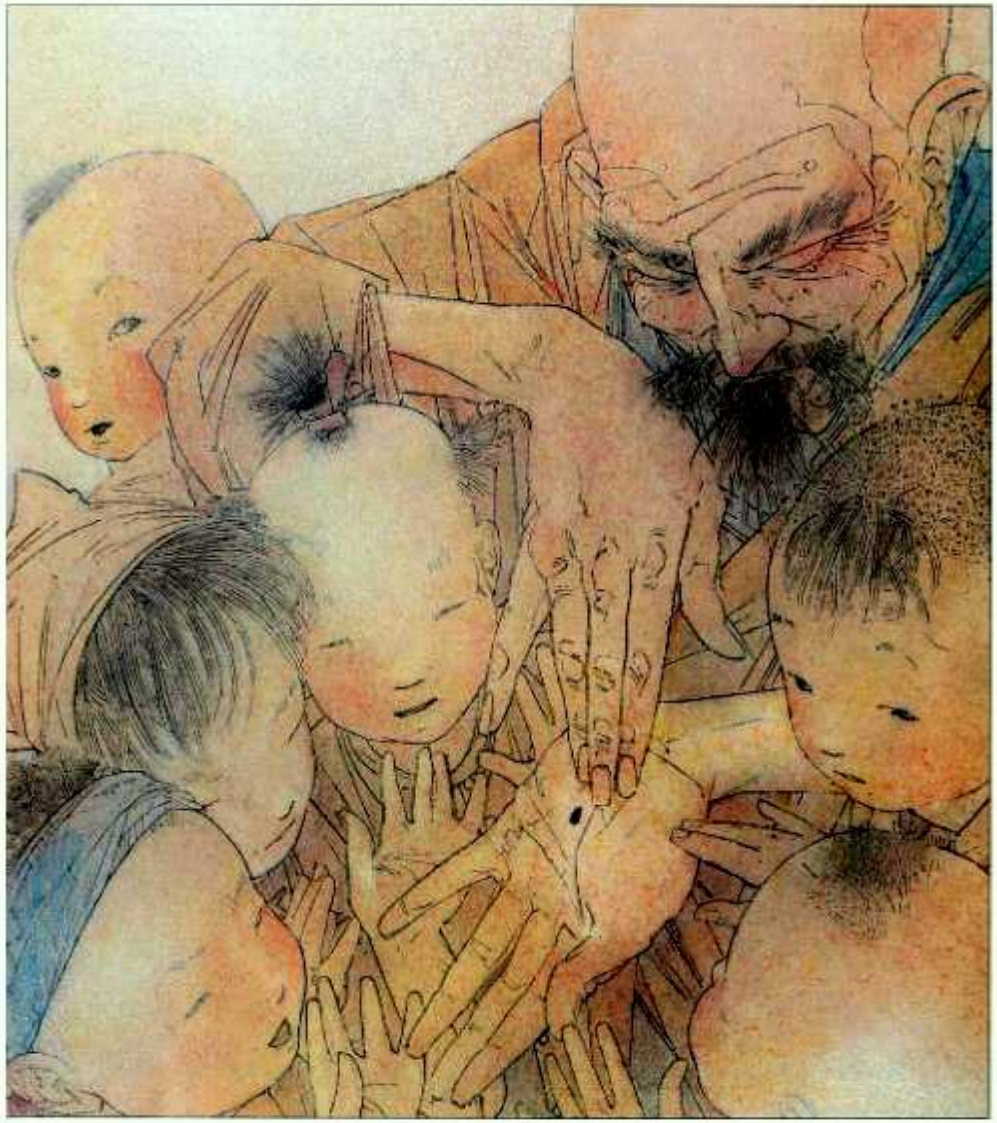

जन्मदिन के उसके सारे पैसों से सिर्फ एक छोटी नाशपाती ही मिली. सन्यासी कहीं यह न देख लें कि नई पतंग पाने की कितनी तीव्र इच्छा उसके मन में थी, फू नान ने नीचे धूल भरी ज़मीन की ओर देखते हुए अपने दोनों हाथों में रख कर नाशपाती उन्हें भेंट की.

झुक कर धन्यवाद करने के बाद वृद्ध ने लोगों से बात की. “क्योंकि आप में से कई लोगों ने अपना भोजन मेरे साथ बाँटा है,” उन्होंने कहा, “मैं हर एक को एक स्वादिष्ट नाशपाती खिलाऊँगा.” वह गाँव के चौराहे में टहलते हुए आगे चले. भीड़ उनके पीछे-पीछे आती रही. अन्य लोगों की तरह उत्सुक, किसान वू भी भीड़ के पीछे चलता रहा.

सन्यासी चौराहे के दूसरी तरफ रुक गये. उस छोटी नाशपाती को वह झटपट दाँतों से काट कर खाने लगे, अंतत: उसका एक छोटा काला बीज ही बचा.

पीठ पर लटके एक थैले से उन्होंने एक फावड़ा निकाला, मिट्टी खोद कर एक गड्ढा बनाया और उसमें वह काला बीज बो दिया. “फू नान,” उन्होंने पुकारा, “एक केतली में उबलता हुआ पानी लेकर आओ.”

निकट की एक चाय की दूकान से फू नान उबलता हुआ पानी ले आया. वृद्ध ने गर्म पानी मिट्टी में डाला. उसी पल एक हरा अंकुर मिट्टी से बाहर निकल आया. मिनटों में अंकुर पेड़ बन गया, उसकी डालों पर पत्ते निकल आए, कोंपले निकल आईं. तितलियाँ और मधुमक्खियाँ आकर्षित होकर वहाँ आ गईं. डालों पर पक्षी आकर गाने लगे.

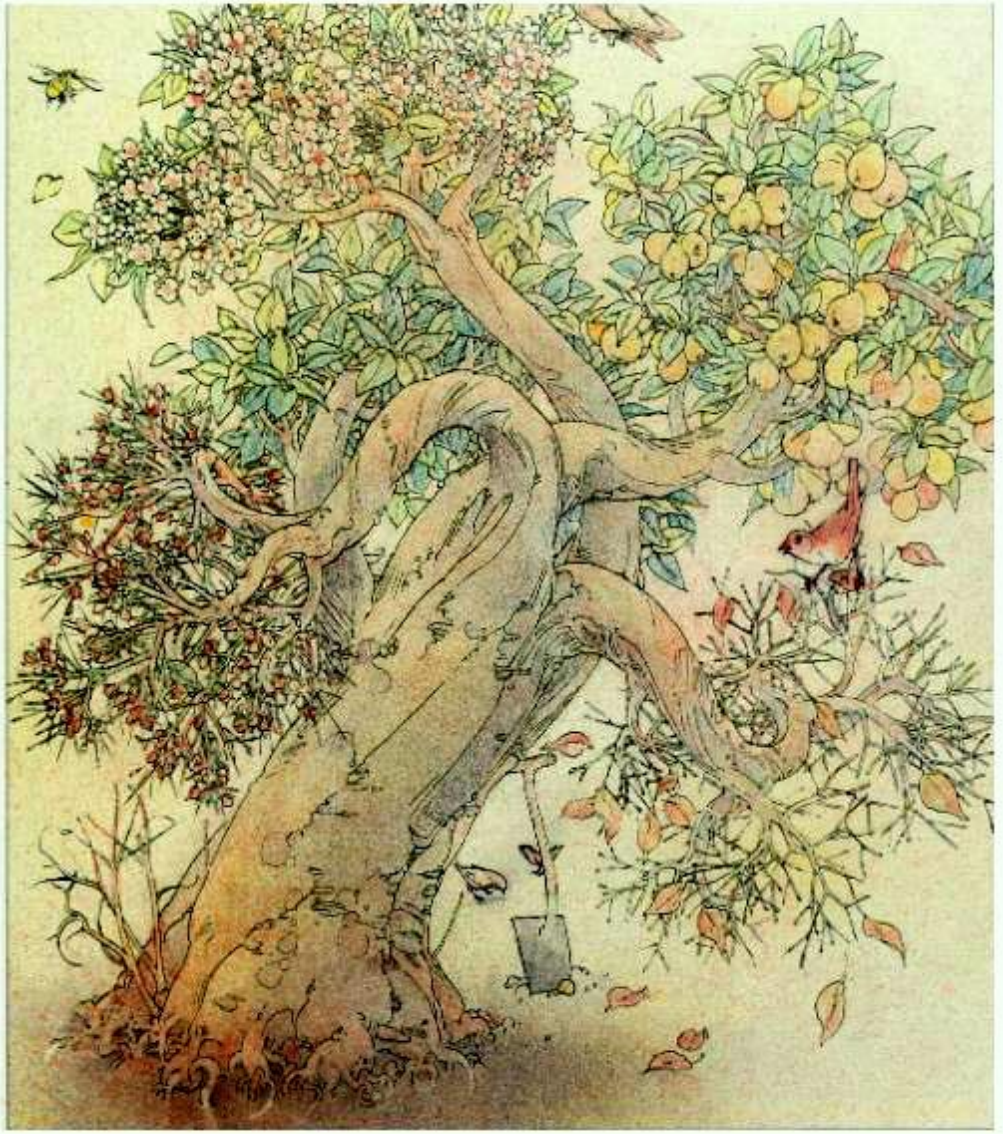

कोंपलें फूल बन गईं, फूलों में छोटी-छोटी हरी नाशपातियाँ निकल आईं जो तुरंत ही पक कर सुनहरी भूरे रंग की हो गईं. वृद्ध ने एक नाशपाती को सूंघा. “मुझे लगता है कि यह पक गई हैं और हम इन्हें खा सकते हैं,” उन्होंने कहा. उन्होंने नाशपातियाँ तोड़ीं और हर ग्रामीण को एक नाशपाती दी. उन्होंने सबसे बड़ी और पकी हुई नाशपाती लियांग को दी.

“मीठी! रस-भरी! स्वादिष्ट!” लोगों ने कहा. सन्यासी के जादू से वह आश्चर्यचकित हो गए थे.

जैसे ही अंतिम नाशपाती तोड़ी गई, पेड़ के पत्ते सूख कर पीले हो गए और झरने लगे. जो डालें मज़बूत दिखाई दे रही थीं वह सूख कर विकृत हो गईं.

“पेड़ ने सारे फल दे दिये हैं,” वृद्ध ने कहा. अपनी कुल्हाड़ी से उस पेड़ को उन्होंने काट डाला और उसकी लकड़ियाँ लोगों को जलाने के लिए दे दीं.

उन्होंने अपने हाथ झाड़ कर धूल साफ की और अपने थैले से ढूँढ़ कर कागज़ का एक टुकड़ा निकाला जो उन्होंने फू नान को दिया. “जब तुम घर पहुँच जाओगे,” उन्होंने फुसफुसा कर उससे कहा, “इसको एक धागे से बाँध देना और फिर देखना क्या होता है.”

फिर हाथ हिला कर उन्होंने सबको अलविदा कहा और पहाड़ों की ओर जाने वाले रास्ते पर चल दिये.

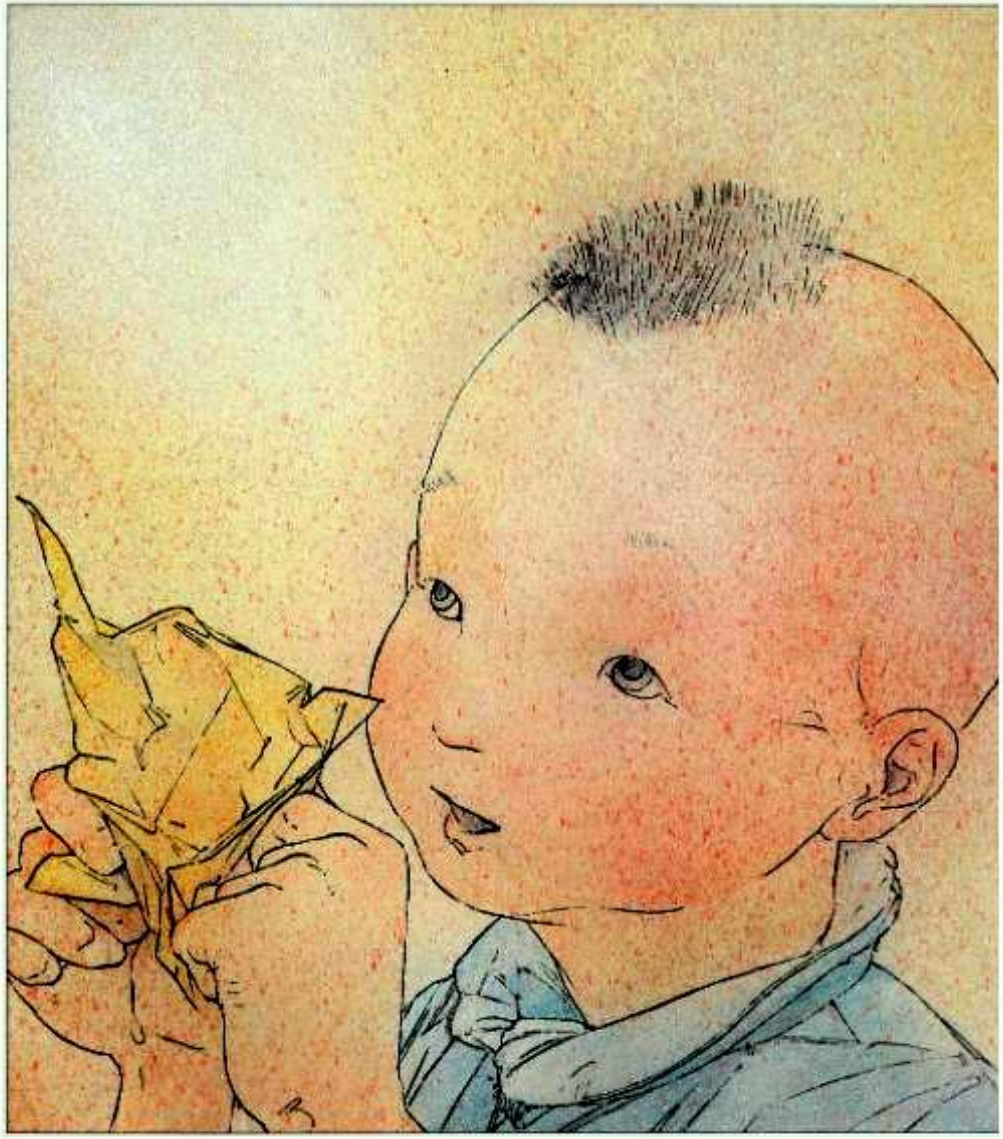

सब लोग इकट्ठे होकर उस जादू के विषय में बात करने लगे जो उन्होंने देखा था. फू नान ने कागज़ का टुकड़ा अपनी जेब में रख लिया और अपने माता-पिता को ढूँढ़ने निकल पड़ा.

गाँव के चौराहे से आई क्रोध भरी दहाड़ सुन कर फू नान रुक गया. लोगों ने किसान वू को उस जगह खड़े देखा जहाँ उसका ठेला था. लेकिन उसकी नाशपातियाँ और उसका ठेला गायब हो गए थे. सिर्फ गधा और ठेले के दो पहिये वहाँ थे.

तभी फू नान सब समझ गया. वृद्ध सन्यासी ने जादू से किसान वू की सारी नाशपातियाँ गायब कर दी थीं. पहिये को छोड़, ठेले के अन्य भाग पेड़ बनाने में उन्होंने उपयोग कर लिये थे.

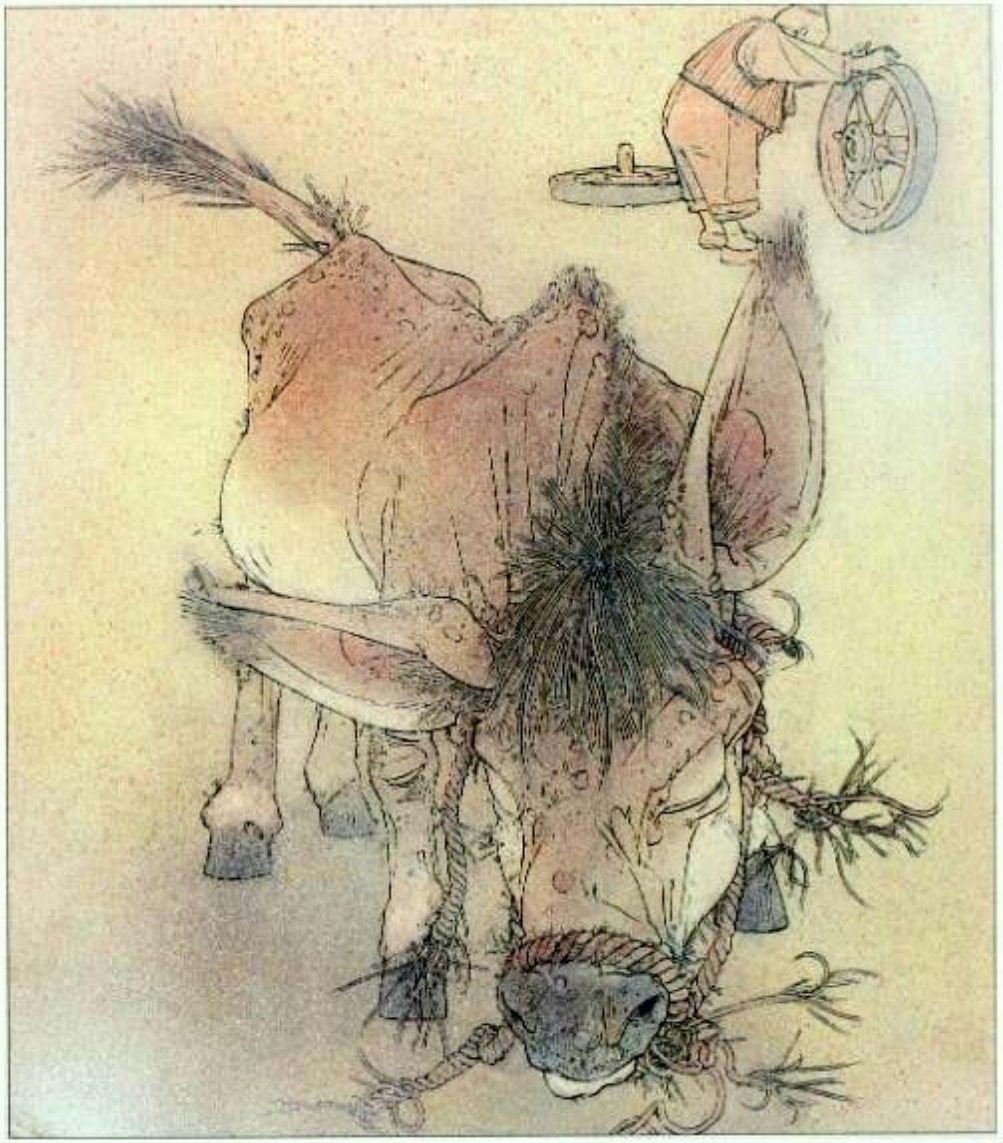

किसान वू भी समझ गया कि क्या हुआ था. चौराहे में इकट्ठे लोगों को इधर-उधर धकेलते हुए, वह सन्यासी के पीछे भागा और चिल्लाया, “उस बूढ़े भिखारी को पकड़ो. उसने मेरी नाशपातियाँ चुराई थीं.”

लेकिन पहाड़ों की ओर जाते रास्ते पर सन्यासी बहुत दूर निकल गये थे. किसान वू के पीछे खड़े ग्रामीण इतनी ज़ोर से हँस पड़े कि उनके लिए खड़े रहना भी कठिन हो गया.

उस दिन से किसान वू के नाशपातियाँ खोने की कहानी सुना कर गाँव के लोग अपने बच्चों को आज भी सचेत करते हैं, “उस मूर्ख किसान की तरह कंजूसी न करना अन्यथा अंत में जगहँसाई का कारण बन जाओगे.”

उस दिन से टोकरी बनाने वाले के बेटे को आकाश में उड़ते हुए पक्षी देखना अच्छा लगता है, लेकिन फिर उसने कभी कोई पक्षी नहीं पकड़ा. लियांग का कुआँ मीठे, स्वच्छ पानी से हमेशा भरा रहता है, सूखे के दिनों में भी.

और कागज़ का जो टुकड़ा वृद्ध ने फू नान को दिया था वह एक विशाल, शानदार पतंग बन गया. अगस्त चन्द्रमा उत्सव पर जब पहली बार उसने पतंग को शाम के समय उड़ाया तभी वह जान गया था कि जितनी भी पतंगे उस ने अबतक ली थीं वह पतंग उन सबसे अधिक सुंदर और मज़बूत थी. पतंग के मांजे को पकड़े हुए और हवा में पतंग की पूँछ के फड़फड़ाने की आवाज़ सुन कर, फू नान को लगा कि वृद्ध सन्यासी उसके निकट ही थे. एक दिन, उसने सोचा, गाँव त्याग कर वह वृद्ध सन्यासी का अनुसरण करते हुए पहाड़ों में जाने योग्य हो जायेगा.

अंत